लूटपाट और गार्ड की हत्या की बात नहीं हो रही हजम

जेवरात ज्यों के त्यों मिले थे, घर में रखा काफी सामान भी सुरक्षित था

शुजात आलम
नई दिल्ली।

पुलिस ने मान सरोवर पार्क मर्डर मिस्ट्री से पर्दा उठाकर जो कहानी उजागर की, वह हजम नहीं हो रही है। दरअसल हत्याकांड के बाद लोकल पुलिस ने दावा किया था कि लूटपाट के लिए हत्याकांड को अंजाम नहीं दिया गया है। जांच के दौरान पुलिस को जिंदल परिवार की महिलाओं के शरीर पर कीमती जेवरात ज्यों के त्यों मिले थे। इसके अलावा घर में रखा काफी सारा सामान भी सुरक्षित मिला था। ऐसे में पुलिस लूटपाट की संभावनाओं से इनकार करते हुए मर्डर के पीछे कुछ और कारण बता रही थी। शुरुआती जांच के बाद पुलिस ने ऐसी आशंका जताई थी कि बदमाशों ने शायद घर की तलाशी ली है, लेकिन अब पुलिस लूटपाट को हत्याकांड की मुख्य वजह बता रही है। लूटपाट की गुत्थी सुलझाने के बाद भी पुलिस ने महज 50 हजार रुपये और कुछ जेवरात बरामद होने का दावा किया है। इधर, लूटपाट में जब गार्ड राकेश शामिल था, तो उसकी हत्या उसके ही बेटे व दामाद ने क्यों कर दी। क्या कोई पिता अपने बेटे व दामाद की पोल खोल सकता है। अनुज व विकास ने पिता पर यकीन नहीं किया, उन्होंने अपने बाकी साथियों पर यकीन किया।

बाकी साथी भी खोल सकते थे राज लेकिन गार्ड को ही क्यों मारा गया

मानसरोवर पार्क : गार्ड का बेटा-दामाद निकला हत्यारा

- पांच गिरफ्तार, दो की अब भी तलाश, 50 हजार नकद व जेवर बरामद
- गार्ड राकेश राज न खोल दे, इसलिए बेटे-दामाद ने मार डाला

जिंदल परिवार की चार महिलाओं और गार्ड की हत्या की गुत्थी सुलझी

अमर उजाला ब्यूरो
नई दिल्ली।

मानसरोवर पार्क इलाके में सात अक्तूबर को जिंदल परिवार की चार महिलाओं और उनके गार्ड की हत्या की गुत्थी को पुलिस ने दो माह बाद सुलझा लिया है। हत्याकांड की साजिश मृत गार्ड राकेश कुमार ने लूटपाट के लिए अपने बेटे व दामाद के साथ मिलकर रची थी, लेकिन कहीं पिता राज न खोल दे, इसलिए बेटे व दामाद ने उसकी गला रेत कर हत्या कर दी।

हत्याकांड में मृत गार्ड के बेटे गांव नंगला, बागपत निवासी अनुज कुमार (25), दामाद गांव कंदेरा, रामबाला, बागपत निवासी विकास उर्फ विक्की (26), विकास की बुआ के लड़के लोनी निवासी सन्नी (22), एक और विकास उर्फ विक्की (30) व नीरज (37) को मंगलवार देर रात गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने आरोपियों के पास से वारदात में इस्तेमाल एक चाकू, 50 हजार रुपये कैश और कुछ जेवरात बरामद किए हैं। पुलिस को इस मामले में अभी दो आरोपियों की तलाश है।

अपराध शाखा के संयुक्त आयुक्त आलोक कुमार ने बताया कि हत्याकांड के बाद दिल्ली पुलिस की लगभग सभी जांच एजेंसियों ने मामले की छानबीन शुरू की। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में पता चला कि किसी ऐसे शख्स ने सभी के गले रेते थे, जिसे शरीर के अंगों की जानकारी थी। साथ ही उसे यह भी पता था कि किस जगह की नस काटने से बिना शोर मचाए जल्दी मौत हो जाएगी। जांच में पता चला कि मृत गार्ड राकेश का दामाद जीटीबी अस्पताल में सफाई कर्मचारी है। वह मॉर्चरी समेत कई विभागों में काम कर चुका है। पुलिस ने दामाद विकास पर नजर रखनी शुरू की। शक के आधार पर उससे पूछताछ की गई, तो वह टूट गया। उसने बताया कि राकेश अगस्त में अपने गांव छपरौली-नंगला गया था। वहां उसने पत्नी कृष्णा, बेटे अनुज व दामाद विकास को बताया कि जिंदल परिवार के घर लूटपाट कर मोटी रकम प्राप्त की जा सकती है। उसी समय लूटपाट की योजना रच ली गई। योजना में अनुज ने नीरज,दीपक और विकास ने बुआ के लड़के सन्नी व अन्य रिश्तेदार विकास उर्फ विक्की (दूसरा) और दोस्त नितिन को शामिल कर लिया।

मानसरोवर पार्क हत्याकांड में पकड़े गए आरोपी।

25 सितंबर को की गई जिंदल परिवार की रेकी

25 सितंबर की शाम को विकास, अनुज और सन्नी ने मानसरोवर पार्क में जिंदल परिवार की रेकी की। इसके बाद छह-सात अक्तूबर की रात सातों आरोपी रात करीब 2 बजे दो ऑटो से मानसरोवर पार्क पहुंचे। राकेश दामाद विकास को ऊपर ले गया। राकेश के कहने पर नूपुर ने दरवाजा खोला। दरवाजा खोलते ही विकास ने उसका गला रेत दिया। बाकी आरोपी अंदर दाखिल हो गए। चारों की हत्या करने के बाद घर की अलमारी तोड़ दी। इधर, गार्ड राकेश नीचे नजर रखने के लिए आ गया। सभी माल लेकर नीचे पहुंचे, तो विकास व अनुज ने भेद खुलने के डर से पिता राकेश की हत्या कर दी। वारदात के बाद तड़के 4 बजे सभी आरोपी जीटीबी अस्पताल के पास पहुंचे। वहां लूटे गए 14 लाख रुपये सात जगह बंट गए। जेवरात भी बांट दिए गए। अगले दिन सभी अपनी-अपनी ड्यूटी पर लौट आए। पुलिस को किसी पर शक नहीं हुआ। इस मामले में पुलिस को फिलहाल दीपक और नितिन की तलाश है। पुलिस इस बात का भी पता लगाने का प्रयास कर रही है कि वारदात में राकेश की पत्नी शामिल थी या नहीं, उससे पूछताछ जारी है।

200 से अधिक लोगों से की पूछताछ

हत्याओं की गुत्थी सुलझाने के लिए पुलिस ने एड़ी से चोटी तक का जोर लगा दिया। जिंदल परिवार समेत उससे जुड़े हर शख्स से पूछताछ कर डाली। जिंदल परिवार के नौकर, ड्राइवर, सफेदी करने वाले, कबाड़ी, सब्जी वालों व अन्य से। लोकल पुलिस, अपराध शाखा, स्पेशल सेल व अन्यों जिलों की पुलिस ने करीब 200 से अधिक लोगों से पूछताछ की, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला। यहां तक कि राकेश के परिवार से भी सभी जांच एजेंसियों ने पूछताछ की थी।

प्रॉपर्टी विवाद में शक के घेरे में रहा परिवार

पुलिस सूत्रों की मानें तो करीब सवा सौ साल पुराना जिंदल परिवार 3600 गज के एक बड़े परिसर में रहता है। यहां करीब छह भाइयों के 45 सदस्य रहते हैं। हर परिवार के हिस्से में 600 गज जगह आ रही है। सूत्रों का कहना है कि अंदर खाने उर्मिला की बेटियां अपनी प्रॉपर्टी को बेचना चाहती थीं। इस बात से परिवार के बाकी सदस्य इत्तफाक नहीं रखते थे। शुरुआत में इसी को हत्या का कारण माना जा रहा था। वहीं जिंदल परिवार किसी भी तरह के प्रॉपर्टी विवाद की बात से लगातार इनकार करता रहा।

पुलिस आयुक्त ने ट्वीट कर दी बधाई

पुलिस आयुक्त अमूल्य पटनायक ने अपराध शाखा की टीम को ट्वीट कर बधाई दी। उन्होंने कहा कि अधिकारियों ने जांच कर पूरी तरह क्लूलेस मर्डर की मिस्ट्री से पर्दा उठाया। पुलिस मुख्यालय में आयुक्त ने अधिकारियों से मुलाकात भी की।

मां और तीनों बेटियां। फाइल फोटो

मातम नहीं मना पाया था परिवार

राकेश 15 साल से जिंदल परिवार के यहां गार्ड था। उसे पता था कि जिंदल परिवार की महिलाएं उर्मिला जिंदल (78), उसकी तीन बेटियां संगीता गुप्ता (52), नूपुर जिंदल (48) और अंजली जिंदल (45) मोटा कैश व जेवरात घर में रखती हैं। जिंदल परिवार का कहना है कि हत्याकांड के बाद उनको मातम मनाने का मौका भी नहीं मिला। पुलिस व बाकी जांच एजेंसियां प्रॉपर्टी विवाद में उनके परिवार पर शक करती रहीं। परिवार के सभी प्रमुख सदस्यों से पुलिस ने पूछताछ की। इससे परिवार की बदनामी हुई। परिवार लूटपाट की बात पुलिस को बताता रहा, लेकिन किसी ने उनकी बात का यकीन नहीं किया।

गार्ड राकेश की पत्नी कृष्णा शक के दायरे में

एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि अगस्त में रक्षाबंधन पर राकेश अपने गांव छपरौली-नंगला गया था। राकेश को पता चला था कि जिंदल परिवार की महिलाएं अपना हिस्सा बेचना चाहती थीं। ऐसे में उसे नौकरी छूटने का डर था, इसलिए उसने लूट की साजिश रची। सूत्रों की मानें तो राकेश अपना घर बनाना चाहता था। वारदात को अंजाम देने के लिए उसने अपनी पत्नी, बेटे व दामाद का भरोसा जीता। बाद में वह दिल्ली आ गया। सूत्रों की मानें तो पत्नी कृष्णा पूरी वारदात की साजिश में शामिल रही थी। वारदात वाले दिन वह जिंदल ऑयल परिसर में ही मौजूद थी। पुलिस उससे पूछताछ कर रही है।

राकेश के नहीं थे परिवार से अच्छे संबंध

दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा दावा कर रही है कि पिछले पंद्रह साल से राकेश दिल्ली में रहकर जिंदल ऑयल मिल्स में गार्ड की नौकरी कर रहा था। वह अपने गांव न के बराबर ही जाता था। पुलिस का दावा है कि पत्नी और परिवार के बाकी सदस्यों से भी उसके संबंध ठीक नहीं थे। यही वजह थी कि अनुज व विकास ने उस पर यकीन न करते हुए उसकी हत्या कर दी। सवाल यह है कि यदि राकेश के परिवार से अच्छे संबंध नहीं थे, तो उसने लूट की साजिश परिवार के साथ मिलकर क्यों रची। पुलिस का यह भी दावा है कि राकेश को बताया गया था कि लूटपाट की जाएगी, लेकिन आरोपियों ने पूरे परिवार को खत्म कर उसे भी मार दिया।

वारदात के समय बंद थे सभी के मोबाइल

पूछताछ में आरोपी अनुज ने बताया कि उसने फरीदाबाद में शराब के एक गोदाम में डकैती डाली थी। वहां साथी ने उसे मोबाइल बंद कर वारदात में शामिल होने के लिए कहा था। इसलिए उसने वारदात के दिन सभी साथियों व जीजा को मोबाइल बंद रखने के लिए कहा था। इसी के चलते किसी भी बदमाश की लोकेशन शाहदरा स्थित जिंदल ऑयल मिल्स की नहीं मिली। फरीदाबाद पुलिस को अनुज की तलाश है।

अनजान के लिए दरवाजा नहीं खोलती थीं महिलाएं

राकेश जानता था कि जिंदल परिवार की महिलाएं अनजान शख्स के लिए दरवाजा नहीं खोलती थीं, इसलिए उसने साथियों से कहा कि वह उनके साथ ऊपर जाएगा। शोर-शराबा न हो, इसके लिए राकेश ने आवाज दी, तो नूपुर ने दरवाजा खोला ⊥ अचानक विकास ने नूपुर का गला रेत दिया। बाकी बदमाश घर में दाखिल हो गए और उन्होंने वारदात को अंजाम दिया।

अपील

मेरी प्यारी बहनों और भाइयों,

दिल्ली सरकार ने बेघर लोगों के लिए बुनियादी सुविधाऐं जैसे स्वच्छ पेयजल, शौचालय, कंबल, बिस्तर आदि से युक्त **248** रैन बसेरों की स्थापना की है। ये रैन बसेरे चौबीस घंटे खुले हैं और निः शुल्क हैं।

शीतकाल के दौरान लोग खुले में सोने के लिए मजबूर न हो यह सुनिश्चित करने के लिए सरकार सभी आवश्यक कदम उठा रही है। यह देखा गया है कि नागरिक और अन्य धर्मार्थ संस्थान कंबल, गद्दे, रजाई, गर्म कपड़े और पैसे बेघर लोगों को दान करते हैं। मैं इस तरह के नागरिकों और संगठनो से अपील करता हूँ कि इन वस्तुओं का दान नजदीकी रैन बसेरों या दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड के नियंत्रण कक्ष, जो कि पुनर्वास भवन आई.पी. इस्टेट, नई दिल्ली - 02 मे स्थित है, में देने की कृपा करें ना कि गलियों या सड़कों पर रह रहे बेघर लोगों को। आपका यह प्रयास बेघर लोगों को शीतकाल के दौरान खुले में ना सोकर रैन बसेरों में सोने के लिए प्रोत्सहित करेगा क्योकि इस दौरान खुले में सोना बेघर लोगों की सेहत और जान के लिए खतरनाक है।

मैं अपील करता हूँ कि यदि आप बेघर लोगों को खुले में सोते हुए पाएँ तो उन्हें नजदीकी रैन बसेरों में स्थानान्तरित होने के लिए प्रोत्साहित करे या दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड की एप **"Rain Basera"** के माध्यम से बेघरों का फोटो खींचकर भेजे। इस एप को निम्न नम्बर पर मिस्ड कॉल करके डाउनलोड किया जा सकता है।

8826400500

आप दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड के नियंत्रण कक्ष, फोन नंबर **011-23378789, 8527898295** और **8527898296** पर भी संपर्क कर सकते हैं।

अरविंद केजरीवाल
मुख्यमंत्री, दिल्ली

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड
(दिल्ली सरकार)

दिल्ली सरकार
आप की सरकार

DIP/SHABDARTH/D/0131/17-18

एनएमडीसी
स्वर्णिम भविष्य की ओर अग्रसर

हर्ष का विषय है कि एनएमडीसी अपना गौरवशाली 60वां हीरक जयंती वर्ष मना रहा है। भारत सरकार, इस्पात मंत्रालय के अधीन एक सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम के रुप में वर्ष 1958 में एनएमडीसी की स्थापना हुई। प्रारंभ से ही एनएमडीसी द्वारा अनेक खनिजों का गवेषण किया गया, जिसमें लौह अयस्क, हीरा आदि सम्मिलित हैं। एनएमडीसी भारत का एकमात्र सबसे बड़ा लौह अयस्क का उत्पादक है तथा उच्च गुणवत्ता के लिए इसे अनेक विश्व स्तरीय प्रमाण सम्मान/अभिप्रमाणन प्राप्त हुए हैं। वास्तव में एनएमडीसी पिछले छः दशकों में खनिज के क्षेत्र में अदभुत निष्पादन का साक्षी रहा है और इसने बृहद एवं उत्तम कार्य निष्पादन किया है। कंपनी विश्व में इस्पात की बढ़ती मांग तथा भविष्य में लौह अयस्क की जरुरतों को पूरा करने की ओर पूर्ण रूप से अग्रसर है। एनएमडीसी अपना हीरक जयंती वर्ष मना रहा है एवं निश्चय ही यह नई ऊंचाइयों को छुएगा।

एनएमडीसी लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
खनिज भवन, 10-3-311/ए, कैसल हिल्स, मासाब टैंक, हैदराबाद-500028. वेबसाइट : **www.nmdc.co.in**

पर्या - हितैषी खनिक